Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

18वीं शताब्दी के ब्रिटिश युग में शिक्षा तथा साहित्य विश्लेषणात्मक अध्ययन

Monu*

Research Scholar, Department of History (UGC NET JRF) MDU, Rohtak

शोध सार – *अठारहवीं शती भारत के इतिहास में 'भीषण अराजकता' का संदेश लेकर आई थी। चारों तरफ अफरा-तफरी का माहौल हो गया। रोज-रोज के लड़ाई-झगडत्रे, मार-पीट, कलह-द्वेष ने जन-जीवन को अधमरा बनाकर रख दिया। हमारे क्षेत्र की हो, इसकी थिति के कारण और भी मिट्टी पलीद हो गई। अंग्रेजों ने कुछ कानून-व्यवस्था ठीक की, अराजकता भी कुछ कम हुई, लेकिन शिक्षा और साहितय की सद्गति, जैसा कि नीचे देखेंगे, अब भी नहीं हुई।*

मुख्य-शब्द: *साहित्य, धर्म ग्रन्थ, कर्मकाण्ड, साधु, अराजकता, सतगुरू।*

----------X----------

भूमिकाः-

जिस समय की हम बात कर रहे हैं उस समय शिक्षा की परिभाषा आजकल की परिभाषा से भिन्न थी। उसका स्वरूप भी अलग ही था। लोगों की धारणा थी कि जिससे व्यक्ति जिसने परंपरागत धंधे में दक्ष हो वही शिक्षा होती है। इसका दूसरा अर्थ यह हुआ कि शिक्षा हर आदमी के लिए तब अलग-अलग मायने रखती थी। मसलन, एक ब्राह्मण के बालक के लिए इसका अर्थ या थोड़ा-सा संस्कृत तथा धर्मग्रंथों, आदि का ज्ञान, जिससे वह कर्मकांड, आदि करा सके। मुसलमान पीर-फकीर के बालक के लिए इसी प्रकार अरबी तथा कुरान शरीफ के कुछ ज्ञान की शिक्षा थीं व्यापारी के लड़के के लिए थोड़ा-सा हिसाब-किताब और मुंडी भाषा, आदि का ज्ञान और किसान-पुत्र के लिए अपने धंधे (कृषि) की जानकारी तथा उसमें दक्ष होना ही शिक्षा थी। इससे परे कुछ भी पढ़ना-लिखना समय नष्ट करना माना जाता था। यही कारण था कि उस काल में गांवों में मुश्किल से ही लोगों द्वारा बनाया चलाया कोई स्कूल देखने को मिलत था। केवल बड़े नगरों या कस्बों में ही स्कूल (देशज स्कूल) होते थे और वहां भी स्थिति बड़ी ही संतोषजनक थी। उन्नीसवीं शती के शुरू में इन देशज स्कूलों की संख्या और प्रसार के संबंध में हमें शार्प द्वारा संपादित 'सरकारी रिकार्ड्स' से जो जानकारी प्राप्त होती है उससे इस कथन की पुष्टि होती है। शार्प कहता है: 'रोहतक, हिसार और गुड़गांव में हिंदुओं के कुल 70स्कूल थे, जिसमें 886 विद्यार्थी 70 अध्यापकों द्वारा शिक्षा प्राप्त करते थे। मुसलमानों के यहां 27 स्कूल थे और उनमें 289 विद्यार्थी, 24 अध्यापकों द्वारा शिक्षा प्राप्त करते थे। दिल्ली जिले में 247 स्कूल थे, जिनमें से अधिकतर दिल्ली शहर में स्थित थे। ऊपरी क्षेत्र में (करनाल, अंबाला आदि में) भी स्थिति निचले भागों जैसी ही थी। पानीपत नगर में 5-6 स्कूल थे, किन्तु उनमें छात्रों की संख बहुत थोड़ी थी। करनाल में यद्यपि 20,000 आदमी बसते थे, किंतु वहां केवल एक स्कूल था। शेष भाग में 18 स्कूल थे जिनमें 27 विद्यार्थी शिक्षा पाते थे।'

इन स्कूलो में शिक्षा या तो मुफ्त दी जाती थी या विद्यार्थी सब खर्च वहन करते थे। सकार का यहां कोई सहयोग नहीं मिलता था। यहां अध्यापक मुख्यतः ब्राह्मण या मौलवी होते थे, जोकि स्कूलों को या तो अपने घर में या फिर मंदिर या मस्जिद में चलाते थे। अध्यापकों को किसी प्रकार की ट्रेनिंग नहीं लेनी पड़ती थी, और उनका ज्ञान अधिकांशतः उतना ही होता था जितना कि वे बच्चों में बांट देते थे। लेकिन सीमित ज्ञान, सीमित आय, आदि के होने पर भी इन अध्यापकों की समाज में खूब इज्जत होती थी।

स्कूलों में पाठ्यक्रम अति साधारण होता होता था, जोकि आम विद्यार्थी अधिक से अधिक चार-पांच साल में पूरा कर लेता था। स्कूल सुबह ही लगते थे और अध्यापकों की मर्जी के अनुसार कोई 5-6 घंटे चलते थे। केवल थोड़े से पढ़ने-लिखने

www.ignited.in

और हिसाब का ज्ञान हो जाए इतना ही पर्याप्त माना जाता था। स्कूलों में प्रवेश की कोई विशेष उम्र निर्धारित नहीं थी। 6 से 15 वर्ष तक का कोई भी व्यक्ति स्कूल में दाखिला ले सकता था। नही स्कूलों का कोई शैक्षणिक वर्ष तय था और न ही परीक्षाएं ली जाती थीं। पढाने के तरीके बड़े ही पुराने और अवैज्ञानिक थे। सब कुछ याददास्त पर आधारित रहता था। बच्चे घंटों बैठ, मेंढक की तरह टर्राते हुए अपने पाठ रटते रहते थे।

सरकार ने इस समय सरकारी स्कूल आदि खोलने-चलाने में कोई नीतिगत दिलचस्पी नहीं ली। हां, एक अफसर, विलियम फ्रेजर ने सोनीपत में निजी खर्चे से किसानों के लिए कुछ स्कूल खोले थे (1816), पर वे भी, सरकार के समर्थन के अभव में थोड़े दिन चलकर बंद हो गए।

सरकारी हस्तक्षेप

ससमसामयिक दस्तावेजों से पता चलता है कि शुरु-शुरु में सरकार ने शिक्षा के प्रति उदासीनता की नीति अपनाई हुई थी। पर आगे चलकर, 1840 के बाद, इस नीति में कुछ परिवर्तन आया। उस काल में हरियाणा उत्तर-पश्चिमी प्रांत के अंतर्गत आ गया था। प्रांत का लेफ्टिनेंट-गर्वनर जेम्स आमसन था। वह गांवों तक शिक्षा पहुंचाना चाहता था और इस दिशा में उसने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए, जिनमें एक था देशज स्कूल। उनकी ठीक तरह से देखभाल करके जनता को उनका अधिक से अधिक उपयोग करन के लिए प्रेरित रिना। लेफ्टनेंट-गर्वनर के प्रयत्नों का परिणाम बड़ा अच्छा रहा और थोड़े अरसे में ही यहां देशज स्कूलों की संख्या बढ़ गई। 1850 तक आते-आते पानीपत जिले में 416, हिसार में 587, दिल्ली में 386, रोहतक में 275 और गुड़गांव में 1230 स्कूल हो गए।

तहसीलदारी स्कूलों की तरह ही इस समय कुछ कस्बा स्कूल भी खोले गए। इन स्कूलों के विषय तहसीलदारी स्कूल वाले ही थे। कस्बे स्कूल शाहबाद, लाडवा, थानेसर, कैथल, सढौरा, सोनीपत, गुड़गांव, पलवल, पानीपत, हांसी, झज्जर, बहादुरगढ़ में खुले। इसी समय कई कस्बों में हाई स्कूल भी खोले गए, जैसे करनाल, रोहतक (1856), भिवानी, रेवाड़ी, देहली, अम्बाला, जगाधरी (1857)।

साहित्य सृजन

जब शिक्षा की दशा बहुत उत्तम न हो तो साहित्य सृजन के लिए तो कोई गुंजाइश ही नहीं रहती, परन्तु फिर भी बड़े आश्चर्य की बात है कि यहां काफी अच्छे की साहित्य की रचना हुई। ये साहित्य सृजनकर्ता मोटे रूप में तीन प्रकार के थे, साधु-संत तथा अन्य धार्मिक पुरुष, दरबारी साहित्यकार, और अन्य सामान्य जन, साधु संत आदि

नित्यानंद:

संत नित्यानंद गरीबदासी थे। संत गरीबदास (1697-1778) के समकालीन थे, पर अधिक आयु मिलने के काण हमारे अध्ययनकालीन काल तक पहुंचते हैं। इनका अधिकांश जीवन रेवाड़ी और रोहतक जिले के कई छोटे-छोटे गांव के 'जोहड़ों' के किनारे बीता, जहां वे सुमधुर वाणी में अपने बनाए हुए 'पद' गाते थे। इन्हीं 'पदों' के संकलन से उनके ग्रंथ बने हैं, जिनमें 'सत्य-सिद्धांतप्रकाश' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसे 'सतगुरू ग्रंथ' भी कहते हैं। यह पुस्तक छः भागों में विभाजित है, जिनमें 'मन' और 'माया' के अंग, सिद्धांत और साहित्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। इनका एक अन्य ग्रन्थ 'नित्यानंद के भजन' नाम से भी प्रसिद्ध है, जिनमें निर्गुण सिद्धान्त और भक्ति का वर्णन किया गया है। अभी हाल में इनका एक और लघु-ग्रन्थ बारहखड़ी प्राप्त हुआ है। इसमें भक्तिकालीन संतों की तरह ही बारहखड़ी के माध्यम से भक्ति के गूढ़ सिद्धान्त सरल रूप में समझाए गए हैं।

जैतराम -

छुड़ानी ग्राम के संत जैतराम, संत गरीबदास के पुत्र थे। उनका कार्यकाल लगभग 19वीं शती का पूर्वार्द्ध था। संतजी अच्छे लेखक थे। इनकी कोई 25 पुस्तकें बताई जाती हैं, जिनमें मुख्य हैं, 'गरीबदास जन्म-कथा', 'मूल जन्म का अंग' और 'धुरव्रभक्त कथा'। इन सब कृतियों में निर्गुण संप्रदाय के सिद्धांतों को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रतिपादित किया गया है।

दयालदास

जैतराम के सामसामयिक एवं संप्रदायी गरीबदास के अनन्य भक्तों में से थे। इनके द्वारा प्रश्नोत्तर शैली में रचित ग्रन्थ 'विचार प्रकाश' काफी प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ पांच भागों में विभक्त है, जिनमें अद्वैत विषयों का प्रतिपादन हुआ है। इसकी भाषा बड़ी ही सरल है, जिसमें 'हरियाणवी' की खासी पुट देखने को मिलती है।

गोपाल सिंह

निर्मला संप्रदाय के एक अन्य कवि संत गोपाल सिंह भी काफी ऊंचे दर्जे के साहित्यकार थे। यह कुरुक्षेत्र में रहते थे। यहां साधनारत रहते हुए उन्होंने 25 पुस्तकों की रचना की पर दुर्भाग्यवश इनकी अधिकतर पुस्तकें अब उपलब्ध नहीं हैं -

www.ignited.in

कवेल 'भावरसामृत', 'मोक्षदायमक्षयप्रकाश', 'राम गीता' और 'रामहृदय' ही अब मिलती है।

आत्मा सिंह

थानेसर के एक दूसरे निर्मला साधु आत्मा सिंह ने भी कई ग्रन्थ रचे थे। पर इनका भी अब तक एक ग्रंथ - 'वेदांतप्रश्नोत्तरमाला' ही प्राप्त है।

उज्ज्वल सिंह

इसी संप्रदाय के उज्ज्वल सिंह ने जो कि ढुड्डी गांव (कुरुक्षेत्र) के रहने वाले थे, सिख संप्रदाय पर दो ग्रंथ लिखे हैं - 'श्री गुरुनानक नारायण ध्यान' और 'आत्म-अनात्म विवेक'

विजयानंद

जैन संप्रदाय के साहित्यकारों ने भी इस काल में हिंदी सहित्य के भंडार में काफी कुछ जोड़ा। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध विजयानन्द सूरि (1837-1897) थे, जिनकी ख्याति सर्वत्र फैली हुई थी। यह अम्बाला के रहने वाले थे। इनके ग्रंथ 'आत्मबावनी', 'सत्वानावली' पद्य के और 'अज्ञान तिमिरमानकर' तथा 'नवतत्त्व' हिंदी गद्य के सुंदर नमूने हैं।

फतहचंद जैन

दूसरे प्रसिद्ध जैन विद्वान जगाधरी के पास कलानोर गांव के थे। यह लगभग 1843 के आसपास वर्तमान थे। इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी, पर अब केवल सूक्तावली नामक ग्रन्थ ही उपलबध है।

विष्णुदास

इसी समय कुछ कृष्ण भक्त कवियों ने भी यहां साहित्य भंडार भरने में सहायता की। इन साहित्यकारों में विष्णुदास सर्वोपरि थे। विष्णुदास झज्जर नगर के निवासी थे। इनके गुरू का नाम रामसुख था। इनका अब केवल एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है जो कि कृष्ण लीला से संबंध 'बारहखड़ी' है।

रामरत्न लघुदास

यह भी कृष्ण भक्त थे। रोहतक के आसपास के किसी ग्राम के रहने वाले थे। अपनी रचनाओं में इन्होनें गुरु मायाराम का खूब यश गाया है। इनके तीन ग्रंथ महत्व के हैं, 'कृष्णध्यानाष्टक', 'गणेशजयति' और 'हनुमानजयति'।

मुरलीदास

यह इस काल के सतनामी कवि थे और हिसार के रहने वाले थे। इनके अब तक चार ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं, हालांकि रचनाएं इन्होंने भी कई की थीं। उपलब्ध ग्रन्थ हैं - 'गुरुमहिमा', 'सुखदेवलीला', 'बारहमासी' और 'उषाचरित्र'। पहला ग्रन्थ गुरू की महानता दर्शाता है, दूसरा सुखदेव की कथा बखानता है, तीसरा सतनामी पंथ की यशगीतिका है और चैथा उषा और अनिरुद्ध के विवाह की कथा का वर्णन करता है।

दरबारी साहित्यकार

उमादास

इस समय, देशी राजा और नवाबों के दरबारों में आश्रित साहित्यकारों ने भी हिन्दी साहित्य का संवर्द्धन किया। इन साहित्यकारों में पटियाला दरबार में रहने वाले उमादास का स्थान सर्वोपरि है। यह थानेसर के रहने वाले थे और 1837 के आसपास इनके वर्तमान होने का उल्लेख है। इन्होंने पटियाला दरबार में रहकर 'महाभारत' के पांच-पर्वों का हिन्दी पद्य में अनुवाद बड़ा ही मनोहर किया है। इनके अन्य ग्रंथ हैं: नीतिरत्नाकर, नामवाला, पंचरत्न, पंचयज्ञ, नवरत्नकवित्त, सुदामारचित, बारहमासा। इन्होंने एक ग्रंथ में अपनी जन्मभूमि की महत्ता भी बखानी है-ग्रंथ का नाम 'कुरुक्षेत्र महात्म्य' है।

जयराम

इसी समय के एक अन्य दरबारी कवि जयराम हुए हैं। यह कुरुक्षेत्र भूमि के निवासी थे। संस्कृत और हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। किन्हीं राजा मित्रसिंह के आश्रित थे, जिनके बारे में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ये कौन थे? संभवतः ये किसी छोटे से सिख ठिकाने के शासक रहे होंगे। इनकी 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के 'कृष्णकांड' का पद्यानुवाद बहुत ही उत्कृष्ट रचना है।

लोक साहित्यकार

ताऊ सांगी

लोक साहित्यकारों में हम ताऊ सांगी को महत्वपूर्ण ठहराते हैं। इनका रचना काल 19वीं शती का पूर्वार्द्ध है। इन्होंने कई ग्रंथों की रचना की थी। पर अब केवल एक 'रुकमिणि विवाह'

www.ignited.in

ही उपलब्ध है। इनकी भाषा में सरलता और ओज है, और कविता में परिपक्वता एवं मधुरता है।

हीरादास

इसी काल में ताऊ सांगी की तरह ही एक बाबा हीरादास भी हुए हैं, जिन्होंने कई ग्रंथ रचे थे। पर इनमें से अब तक केवल एक ही ग्रंथ उपलब्ध हुआ है - वह है 'सांग राजा रतनसेन का' इनकी भाषा में हरियाणवी का पूर्व रूप देखने को मिलता है पर चूंकि हीरादास घुमक्कड़ थे, अतः उनकी भाषा में आसपास के क्षेत्र की उपभाषाओं का प्रभाव भी स्पष्ट झलकता है।

निष्कर्ष

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हरियाणा प्रदेश में जो साहित्य की तलाश हुई है, वह अपर्याप्त है। यदि ठीक रूप से सर्वेक्षण होते तो जाहिर है, बहुत सारा और साहित्य उपलब्ध होता। दूसरी बात यह है कि अब तक जो भी प्रयत्न किए गए हैं, वे केवल हिंदी साहित्य की खोज तक ही सीमित रहे हैं। इस वजह से उर्दू, फारसी और संस्कृत भाषा में जो साहित्य रचा गया है उस तक हम नहीं पहुचें हैं। अच्छी तरह से ढूंढ-खोज होने पर इन भाषाओं के भी साहित्य रत्नों के मिलने की संभावना है।

संदर्भ

1. एल॰पी॰ शर्मा, आधुनिक भारत, इलाहाबाद पब्लिकेशंस, इलाहाबाद, 2005
2. डॉ. एस॰के॰ गुप्ता, आधुनिक भारत शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2013
3. डॉ. श्रीमती सत्या राय, भारत में उपनिवेशदव-हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
4. विपिन चंद्र, भारत का स्वतंत्र संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 190
5. एम॰ लक्ष्मीकांत, भारत की राज्य व्यवस्था, टी॰एम॰एच॰, न्यू दिल्ली।
6. बी॰ एस॰ गोयल, डेभलपमेंट ऑफ़ एजुकेशन इन ब्रिटिश इंडिया 1905-1929, पीएच॰डी॰ थेसिस, दिल्ली विश्वविद्यालय।
7. बी॰ डी॰ बसु, ईस्ट इंडिया कम्पनी के नियम के तहत् भारत में शिक्षा का इतिहास, दिल्ली।
8. जी॰आर॰ मदन, भारतीय सामाजिक-समस्याएँ-सामाजिक विघटन पुनर्निर्माण, भाग-2, दिल्ली
9. श्रीनिवास, एम॰एन॰, आधुनिक भारत में सामाजिक परिर्वन वर्कले कैलीफार्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 1966
10. नुरुल्लाह सैयद एण्ड नायक जे॰पी॰, ए हिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन इन इंडिया, लन्दन, मैकमिलन एण्ड को लि॰, 1951

Corresponding Author

Monu*

Research Scholar, Department of History (UGC NET JRF) MDU, Rohtak

mail2monurohilla@gmail.com